SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) :2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 3, Issue-3, April-May-June : 2025
Published by Rangmati Publication https://www.rangmatipublication.com/

डॉ. रमेश पोखरियाल "निशंक" के उपन्यासों में जीवन मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्तिः एक विश्लेषण

डॉ0 राम भरोसे

प्रस्तावना –

मनुष्य के जीवन का सबसे प्रमुख एवं महत्वपूर्ण उद्देश्य मूल्यों का निर्माण एवं संरक्षण करना है। परमात्मा द्वारा बनाये गये संसार की समस्त कृतियों में मनुष्य के सर्वश्रेष्ठ होने का सारा श्रेय जीवन मूल्यों को ही जाता हैं। मूल्य से अभिप्राय किसी भौतिक वस्तु, विलासितापूर्ण साधन–संसाधन आदि से न होकर मनुष्य की उस विचारधारा,आचरण तथा व्यक्तित्व से हैं जो उसके जीवन में परम कल्याण और विकास की कल्पना को विकसित कर साकार रूप प्रदान करता हैं,यही कारण हैं कि भारतीय संस्कृति में जीवन मूल्यों को संरक्षित,संवर्धित और पोषित करने की उचित व्यवस्था अनादिकाल से ही विद्यमान रही हैं।भारतीय प्राचीन शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ् जीवन मूल्यों की शिक्षा प्राप्त करने की व्यवस्था को भी शिक्षा के अंतर्गत शामिल किया गया। प्राचीन गुरुकुल आधारित शिक्षा पद्धति पर यदि एक दृष्टिपात किया जाएं तो यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता हैं कि दया, करुणा, ममता,समता,शील,विवेक,प्रेम, सहयोग,सामंजस्य, त्याग और सहानुभूति जैसे जीवनपयोगी मानवीय मूल्यों को प्रमुखता से शिक्षण व्यवस्था के मुख्य अंग के रूप में स्वीकार करते हुए जीवन मूल्यों के प्रचार–प्रसार और संरक्षण पर प्रमुखता से बल इस उद्देश्य से दिया गया कि विद्यार्थी अपने सर्वांगीण विकास के लिए न केवल ज्ञान के सागर में गोते लगा कर अज्ञानता के तिमिर का दमन करें अपितु वे जीवन मूल्यों का प्रणेता बनकर अपने व्यक्तित्व का उचित विकास और निर्माण भी कर सकें। आध्यात्मिक विकास की यात्रा में जब हम चारित्रिक विकास की बात करते हैं तो बरबस ही हमारा ध्यान उच्च आदर्शों और जीवन मूल्यों को अपने जीवन में सहजता से स्वीकार करने वाले ऐसे महापुरुषों और महान साहित्यकारों की ओर केंद्रित होता हैं जिन्होंने सफलता के नित नवीन आयामों को तय करते हुए विश्व के मानचित्र पर स्वयं को सिद्ध किया हैं।कहने का अभिप्राय यह हैं कि मानव को मानवीयता की दृष्टि से देखने तथा मनुष्य में देवत्व का उदय करने वाला प्रमुख तत्व जीवन मूल्य ही है।समाज की अनेक घटनाओं को यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत करने वाले दर्पण के रूप में साहित्य की लगभग प्रत्येक विधा में मानवता की स्थापना के उद्देश्य से जीवन मूल्यों को अपनाने का प्रेरक संदेश सदैव दिया गया है।

जीवन मूल्यों का महत्व –

जीवन मूल्यों के अंतर्गत परस्पर प्रेम, सहयोग, सामंजस्य, परोपकार, सेवाभाव तथा सह–अस्तित्व को प्रमुखता से स्वीकार किया जाता हैं। जीवन मूल्य,जीवन रुपी वृक्ष की वे मजबूत और विशाल जड़ें हैं जिन्हें संस्कारों से निरंतर सिंचित किया जाना चाहिए क्योंकि संस्कार रहित एवं मूल्य विहीन व्यक्ति जीवन के कठिन पथ पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की अपेक्षा भ्रामक मार्ग की ओर भटक सकता है।वर्तमान परिपेक्ष्य में आर्थिक समृद्धि को सफलता का पैमाना मानने वाले मनुष्य को भोग–विलास,उपभोक्तावादी तथा भौतिकवादी संस्कृति ने स्वार्थी, लोभी,अवसरवादी,कुटिल,निष्ठुर तथा संकीर्ण बना दिया है। हमारी संस्कृति ने 'वसुधैव कुटुंबकम' तथा 'सर्वे भवंतु सुखिनः'की विशाल दृष्टि को सदैव आत्मसात किया है। विश्व की सभी संस्कृतियों में सबसे महान,समृद्ध और विशाल भारतीय संस्कृति न केवल जीवन मूल्यों को सुरक्षित,प्रतिष्ठित और प्रतिबिंबित करते हुए संवर्धित करती हैं अपितु धर्म,अर्थ,काम,मोक्ष इन पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति करते हुए मनुष्य के जीवन को सुखी,संपन्न, सफल और सम्मोन्नत

डॉ0 राम भरोसे, असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग प्रभारी) भाहीद बेलमती चौहान राजकीय महाविद्यालय पोखरी (क्वीली) टिहरी–गढ़वाल–249146, उत्तराखण्ड ई–मेल: ramharidwar32@gmail.com

बनाने की प्रेरणा देते हुए नवीन मूल्यों का संचार भी करती है। ऐसे पवित्र,दिव्य,और जीवनपयोगी मूल्यों में सुसभ्य आचरण आत्मबल,आत्मचेतना,सुसंस्कार और सनातन सत्य की प्रमुख भावनाएं विशेष रूप से विद्यमान रहती है। जैन धर्म के पंच महाव्रत हो,महात्मा बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग हो या फिर वैदिक धर्म में निहित दस नियम हो,सभी में मनुष्य के जीवन को सफल,कल्याणकारी, श्रेष्ठ और विकसित बनाने,व्यक्तित्व का विकास कर चरित्र निर्माण करने तथा जीवन को विशेष अर्थ प्रदान करने के लिए मनुष्य द्वारा जीवन मूल्यों को अपने व्यवहारिक जीवन तथा आचरण में समाहित करना नितांत आवश्यक है। क्योंकि जीवन मूल्य ही लोक मंगल की भावनाओं से ओतप्रोत,सभी धर्मों की मान्यताओं एवं परंपराओं का उचित निर्वहन करते हुए मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं।

निशंक के उपन्यासों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय जीवन मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति –

जब किसी साहित्यकार की विभिन्न रचनाओं में सकारात्मक चिंतन और जीवन मूल्यों को अभिव्यक्त किया जाता हैं,तब उसकी रचनाएं जीवंत बन जाती हैं और रचनाकार कालजयी। महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस हो या वेदव्यास द्वारा सृजित महान ग्रंथ महाभारत या फिर संस्कृत साहित्य के सृजनकर्ता महाकवि कालिदास द्वारा रचा गया शाकुन्तलम,ये सभी महान एवं ऐतिहासिक कृतियां आधुनिक युग में भी संपूर्ण समाज को प्रेरणा देने का उपक्रम केवल इसलिए कर पा रही हैं क्योंकि इन रचनाओं में जीवन मूल्यों को सजीव और सार्थक रूप से अभिव्यक्त किया गया हैं। प्रसिद्ध समीक्षक डॉ.रामगोपाल सिंह चौहान के विचार जीवन मूल्यों के संबंध में उचित जान पड़ते हैं–*"हर नए युग में जीवन–मूल्य अपना नया संस्कार रखते हैं,यही उनका कल्प है।अपने इस नए संस्कार में उनका पुराना रूप नया बनता है। इस रूप में मानव संस्कार पुराने के प्रवाह क्रम का ही अगला विकास होते हैं। जीवन–मूल्यों के इस नए संस्कार और कल्प की गति को साहित्यकार उस समय तक अपने साहित्य में मूर्तिमत्ता नहीं दे सकता, जब तक कि उसे युग की विचारधाराओं,जीवन दर्शन और जीवन के विकास के लक्ष्य और उसकी गति का ज्ञान न हो।"*१

महान साहित्यकार,कवि और समीक्षक डॉ. धर्मवीर भारती ने अपनी रचना श्मानव मूल्य और साहित्यश के अंतर्गत मानवीय मूल्यों के संबंध में बहुत सुंदर एवं सटीक विचार प्रस्तुत करते हुए कहा हैं कि–*"मानवीय मूल्य विराट मानव जीवन की अगणित शिराओं में संचरित होता रहता है।जहां भी यह रक्त प्रवाह रुका वहीं अंग पक्षाघात से आहत होकर सूख जाता है।"*२

कहने का आशय यह हैं कि मानव मूल्यों के सृजन की यह प्रक्रिया समाज में निरंतर चलती रहती हैं। संस्कृ ति आधारित जीवन मूल्यों में ही विकास की अपार संभावनाएं होती हैं इसलिए अनेक समाजशास्त्री संस्कृति को जीवन मूल्यों की जननी के रूप में स्वीकार करते हैं।

हम जब डॉ.रमेश पोखरियाल के उपन्यासों में जीवन मूल्यों की सरल,सहज,सजीव और सशक्त अभिव्यक्ति तथा पर्वतीय अंचल के साथ–साथ महानगरीय और नगरीय जीवन की परंपराओं और संस्कृति के बीच संघर्ष करते आम आदमी को देखते हैं तो हमारा मन बरबस ही उनके व्यक्तित्व के प्रति नतमस्तक हो जाता हैं। करुणा,प्रेम,त्याग,समर्पण, विश्वास,परस्पर सहयोग एवं सहिष्णुता जैसे जीवन मूल्य विशेष रूप से की रचनाओं में मुखरित हुए हैं।निशंक जी का उपन्यास श्बीराश जहां एक ओर सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति करता हैं वहीं नायिका प्रधान इस उपन्यास में पर्वत पर रहने वाली महिलाओं के जीवन की वास्तविकता और सच्चाई को पूरी साफगोई के साथ प्रस्तुत किया गया हैं।पर्वतों पर जीवनयापन करने वाले मनुष्यों की जीवन शैली,उनकी विचारधारा,सादगी,भोलापन,निश्चल स्वभाव,सरल और सहज व्यक्तित्व को निशंक जी अपने उपन्यासश्बीराश में चित्रित करते हैं।उपन्यास की नायिका बीरा समझदार और प्रतिभाशाली हैं।शिक्षा प्राप्त करने की प्रबल इच्छा होने के पश्चात भी बीरा के मामा उसे अध्ययन हेतु दूसरे शहर में भेजने का साहस नहीं जुटा पाते क्योंकि आज भी समाज में लड़कियों की सुरक्षा बहुत बड़ी चिंता का विषय हैं। कहने को हम भले ही आजाद हो गये हैं परंतु तथाकथित समाज का मानसिक दिवालियापन महिलाओं के साथ होने वाले अन्याय,अनैतिकता और शोषण का प्रमुख कारण हैं।निशंक जी समाज में लड़कियों की दयनीय दशा पर प्रकाश डालते हुए अपने उपन्यास में पर्वतीय समाज के जीवन की वास्तविक झांकी प्रस्तुत करते हुए कहते हैं–*"परंतु घर से बाहर दूर शहर में अकेले पढ़ने के लिए बीरा को भेजने का साहस मामा नहीं जुटा पाएं। बीरा भी मामा की मजबूरियों को समझती थी,इसलिए आगे पढ़ने की इच्छा के बावजूद*

भी,वह मन मसोस कर रह गई। मामा बार–बार मामी को यही समझाते थेशुतम नहीं समझती दुनिया कितनी खराब हो गई हैं।जवान लड़की हैं,भगवान ना करें कहीं कोई ऊंच–नीच हो गई तो कहीं के नहीं रहेंगे हमश्और इस पर तो मामी भी हूं पर हूं करके अपनी सहमति दे देती थी।"३

पर्वत पर रहने वाला समाज महिलाओं को पूजने की परंपरा का पालन अवश्य करता हैं परंतु लड़कियों के प्रति हीनता,उपेक्षा और उदासीनता का दृष्टिकोण आज भी इस समाज में विद्यमान हैं,जिसे शनिशंकश ने निर्भीक होकर अपने उपन्यास में व्यक्त किया हैं। आज पर्वतीय समाज में नैतिकता, मानवता और भाईचारे की भावना समाप्त हो गई हैं।परस्पर द्वेष,दुराचार, अहंकार,स्वार्थ,लालच और कटुता की भावना पारिवारिक संबंधों को नष्ट कर रही हैं।अब पहाड़ पर रहने वाले भी संयुक्त परिवार में रहना पसंद नहीं करते इसलिए बीरा के चाचा–चाची भी लड़–झगड़कर अलग रहने लगे थे। बीरा की चाची जहां उसे पढ़ाने के बिल्कुल खिलाफ थी वहीं उसकी मामी उसकी शिक्षा के लिए खेत बेचने को भी तत्पर थी। इस प्रकार उपन्यास में डॉ. शनिशंकश्बीरा की मामी के माध्यम से ममता,त्याग,संवेदना,दया और वात्सल्य से परिपूर्ण सजग नारी का तथा चाची के माध्यम से पर्वतीय इलाकों में रहने वाली रहने वाली कर्कश,स्वार्थी,अहंकारी और रूढ़िवादिता से ग्रस्त नारी का चित्रण करते हुए सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों जीवन मूल्यों पर प्रकाश डालते हैं।

उपन्यास का एक अन्य पात्र दीपक जब उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु अपने गांव को छोड़कर शहर जाने का निर्णय लेता हैं तब बीरा सहयोग,सद्भाव, समर्पण और सेवा रूपी जीवन मूल्यों की प्रणेता बनकर दीपक की विधवा मां श्यामा की देखभाल करने का आश्वासन देते हुए दीपक से कहती हैं– *"देख तू काकी की चिंता तो कर मत,मैं तो हूं ना उनके साथ! मैं उनकी पूरी देखभाल कर लूंगी। तेरे से ज्यादा ही ध्यान रखूंगी काकी का,मुझे कौन सी पढ़ाई करने कहीं जाना हैं ? तू पढ़कर आएगा तो हम सबको अच्छा लगेगा,पर अब तो तू शहरी हो जाएगा न। कहां याद रहेंगे हम लोग! अभी तो काकी की इतनी चिंता हो रही है,पर क्या पता तब क्या होता हैं?४*

उपन्यास के एक अन्य प्रसंग में बीरा का विवाह संबंध जिस परिवार में तय होता है वहां लड़का विवाह के समय दहेज में रंगीन टेलीविजन और फ्रिज की मांग करता है। बीरा के गरीब मामा आर्थिक विपन्नता के बीच घिरे हुए हैं परंतु समाज में अपनी प्रतिष्ठा धूमिल हो जाने के भय से दहेज के लिए पैसे की व्यवस्था करने के चिंतित हो जाते हैं। ऐसे में बीरा इन रूढ़िग्रस्त परंपराओं पर कुठाराघात करते हुए स्वयं जीवन मूल्यों की प्रतीक बनकर इस कुप्रथा के विरोध में अपना स्वर बुलंद करते हुए अपने मामा–मामी से कहती हैं –*"आप पहले मेरी बात पूरी सुन लीजिए।श्बीरा के स्वर की दृढ़ता और चेहरे का तेज देखकर दोनों चुप्पी साध गए। बीरा बोलती चली गई,श्अब मुझे यह रिश्ता मंजूर नहीं। रुपए–पैसे से खरीदा गया मांस का पिंड नहीं चाहिए मुझे। ये नासूर मेरी जिंदगी को अंदर से खोखला कर देगा। जिस इंसान के अंदर इतनी मानवता नहीं रही है कि वह अपने परिवार की मान–मर्यादाओं का कुछ ख्याल रख सके,वह भला मेरी भावनाओं का क्या सम्मान करेगा? वह अन्य लोगों की क्या इज्जत करेगा?वह क्या मना करेंगे इस रिश्ते के लिए? उनसे पहले मैं ही मना करती हूं।"५*

निशंक जी के एक अन्य उपन्यास श्मेजर निरालाश में भी मानवीय और राष्ट्रीय मूल्यों की अभिव्यक्ति दिखाई पड़ती है। सेना के अधिकारी मेजर निराला धरती का स्वर्ग कहे जाने वाले कश्मीर में युद्ध के मोर्चे पर भारत देश की एकता,अखंडता और अस्मिता की रक्षा के लिए लड़ते हैं। मेजर निराला और कर्नल सिंह के बीच हुई बातचीत में अनुशासन,वीरता,समर्पण और राष्ट्रभक्ति जैसे जीवन मूल्य इस प्रकार दिखाई देते हैं –"मेजर को करारा झटका लगा। उसे लगा मानों हाथ में आए दुश्मन के गिरेबान पर पकड़ ढीली पड़ गई हो। उसने प्रतिकार किया 'आई एम सॉरी सर ! प्लीज कैंसिल माय लीव सर! मेरे लिए देश की रक्षा और यह जंग अवकाश से कई गुना महत्वपूर्ण है, ओवर।'

'समझने की कोशिश करो ऑफिसरश्थोड़ा नर्म किंतु समझाने वाले लहजे में कर्नल ने उधर से कहा–६ यह जंग बहुत लंबी चलने वाली हैं।इसलिए मैं चाहता हूं,कि तुम 15 दिन की छुट्टी काट लो। जंग जब चरम पर होगी,तब तुम्हारी सबसे अधिक जरूरत हमें होगी,ओवर ।'

'सर में छुट्टी नहीं जाना चाहता,मैं चरम तक जंग लड़ना चाहता हूं। ओवर! मेजर ने कहा।

'मेजर तब तक तुम थक जाओगे, यूं भी तुम्हें फ्रंट पर लगातार 12 दिन हो गये,सो इट्स कंपलसरी टू... यू....।ओवर ! कर्नल ने पुनःआदेश दिया।'

'निशंक' उस देवभूमि के सच्चे सपूत हैं,जहां की तरुणाई देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने और से भी पीछे नहीं हटती। कवि 'निशंक' के हृदय में भी देशप्रेम की ज्योत सदैव प्रज्ज्वलित होती हैं इसलिए उनके व्यक्तित्व में राष्ट्रभक्ति कूट–कूट कर भरी हैं।६

डॉ.रमेश पोखरियाल 'निशंक' का उपन्यास 'पहाड़ से ऊंचा' भी पर्वतीय समाज के श्रेष्ठ जीवन मूल्यों को अभिव्यक्त करने में पूरी तरह सफल रहा हैं।अपने व्यक्तिगत जीवन के अच्छे और बुरे अनुभवों को उपन्यास का रूप देकर निशंक जी ने इस उपन्यास को पूर्ण मनोयोग से रचा है। पर्वतीय समाज का रहन–सहन, परिवेश, परंपराएं, संस्कार, मूल्य एवं भाषा का जीवंत चित्रण इस उपन्यास में दिखाई देता है। उपन्यास की शुरुआत में पर्वतीय समाज की सबसे बड़ी समस्या श्पलायनश का उल्लेख करते हुए निशंक जी उपन्यास के पात्र कैप्टन शंकर दत्त के माध्यम से युवाओं को पलायन का दर्द बताने में सफल हुए हैं।

"सेना में 32 साल की नौकरी के बाद कैप्टन शंकर दत्त बड़े उत्साह से गांव आकर बस गए थे।उनसे पहले रिटायर हुए सूबेदार गोपाल दत्त, मोहन सिंह बिष्ट के साथ ही न जाने कितने और साथी देहरादून, रुड़की और कोटद्वार में बस चुके थे। संगी–साथी जब शहर में बसने की बात करते, तो शंकर दत्त का मन व्यथित हो जाता फौज की व्यस्त नौकरी में यदा–कदा पहाड़ से हो रहे पलायन की बात सुनकर उनका मन खराब होने लगता था। इसी के चलते उन्होंने रिटायरमेंट के बाद गांव में ही बसने की ठानी थी।"७

डॉ. 'निशंक' का चौथा उपन्यास शनिशांतश नारी की गरिमा के जीवन मूल्यों की वास्तविक अभिव्यक्ति करता हैं। उपन्यास की नायिका मिताली अपने माता और पिता की मृत्यु के पश्चात दो छोटे भाई और एक छोटी बहन की जिम्मेदारी और दायित्व को पूरी ईमानदारी के साथ निभाने वाली ऐसी युवती हैं जो अपने भाई–बहनों के प्रति प्रेम,स्नेह,ममत्व,त्याग,समर्पण और सेवा का भाव रखती है। निशंक जी ने इस उपन्यास में नारी की महिमा को न केवल उच्चता प्रदान की हैं अपितु अनेक जीवन मूल्यों को भी सजीव रूप में प्रस्तुत किया हैं। मिताली के त्याग को शब्दों में पिरोकर निशंक कहते हैं –*"मिताली ने अपने बारे में सोचा ही नहीं। सोचती भी कैसे? उसने अपनी सारी आशाएं,सारे सपने भाई–बहिनों में ढूंढने शुरू कर दिए थे। अपना तो अब उसका कुछ है ही नहीं। बस एक लक्ष्य है,एक संकल्प है और एक समर्पण है भाई बहनों के प्रति। इन्हीं सब को पूरा करने में उसकी खुशी है,जीवन का आनंद है।"८*

'अपना पराया' उपन्यास में भी डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने नारी मन के जीवन मूल्यों को सजीव रूप से प्रस्तुत किया हैं। उपन्यास की पात्र लक्ष्मी त्याग, समर्पण, बलिदान, प्रेम, ममता आदि जीवन मूल्यों की प्रणेता हैं तो दूसरी ओर लक्ष्मी की सास कमला हिंसा,क्रोध,लालच,स्वार्थ जैसे नकारात्मक जीवन मूल्यों को अपने जीवन में स्वीकार करती हैं। इस उपन्यास में श्अपनी बातश्के अंतर्गत डॉ. निशंक इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि –*"साहित्य का श्मूल आधार ही नहीं,श श्आत्माश्भी है। जैसे उर्वरता बिना धरती श्बांझश है,वैसे ही संवेदना बगैर साहित्य। यही संवेदनशीलता हमें मानवीय मूल्यों व मानवीय रिश्तों से जोड़ती है और जीवन को उसकी समग्रता में अनुभव कराती हैं।साहित्य, इसी वेदना,संवेदना,अनुभूति और अनुभवों से अनुप्रमाणित होता है। यही संवेदना साहित्य को सजक और सार्थक बनती हैं। जीवन मूल्यों के लिए मेरे अंदर की छटपटाहट इसी संवेदना की देन हैं। यही संवेदना मुझे जन–जन से जोड़ती आई हैं।उनका सहयोगी व सहभागी बनाती आई है। मेरी रचनाओं का संबल और शक्ति यही हैं। मुझे जनोन्मुखी व जन सरकारी रचनाओं के लिए यही संवेदना प्रेरित करती रही है। यही मैं सच्चे साहित्य की सार्थकता मानता हूं और इसी को समर्पित हूं।"९*

अपने अगले उपन्यास 'पल्लवी' में भी निशंक ने पर्वतीय क्षेत्र गढ़वाल की भौगोलिकता,सामाजिक उपस्थिति और परिवेश के माध्यम से 'आंचलिकता' से सभी पाठकों को रूबरू कराया है। कहानी के नायक और नायिका पल्लवी तथा ध्रुव के माध्यम से निशंक जी ने जीवन मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति और आदर्श चरित्रों को बहुत सुन्दरता से गढ़ा हैं। श्प्रतिज्ञाश उपन्यास में शनिशंकश ने पर्वतीय जीवन को साकार करते हुए गांव से युवाओं का पलायन,रोजगार के अभाव और आर्थिक विपन्नता के चक्रव्यूह में फंसे पर्वतीय लोगों का संघर्ष,जीवन जीने के लिए आवश्यक मूलभूत सुविधाओं की कमी और आधुनिक सभ्यता के आगमन से उत्पन्न विसंगतियों का चित्रण किया हैं।

निष्कर्ष –

अंत में यह कहा जा सकता हैं कि जब आधुनिकीकरण मनुष्य के व्यावहारिक जीवन तथा मानवीय मूल्यों पर अपना नकारात्मक प्रभाव डाल रहा हों,जब आधुनिक कहलाने की चाह में हम अपनी परंपराओं और संस्कारों का त्याग करते जा रहे हों,जब पारिवारिक और आध्यात्मिक विचारधारा कलुषित हो चुकी हों,जब प्रगति के नाम पर प्रत्येक क्षेत्र में पनप रही कुप्रवृत्तियां पूरे समाज को खोखला बना रही हों वैसे विषम परिवेश में जनसाधारण को सुसभ्य,सुसंस्कारी व सदाचारी बनाने,आध्यात्मिक प्रयासों का कुशल संचालन करने और जीवन में सकारात्मक दृष्टि के साथ आगे बढ़ने में मानवीय मूल्यों का महत्वपूर्ण योगदान हैं। वैज्ञानिक प्रगति हमें शक्तिशाली और सुविधा संपन्न बनाती हैं,हमें विकास की मुख्य धारा से जोड़ती हैं,विचारों के खुले आकाश में हमें विचरण करने की स्वतंत्रता भी देती हैं परंतु विडंबना यह हैं कि हम आधुनिकता को सही मायने व उचित स्वरूप में आत्मसात करने में असफल साबित हुए हैं।आधुनिकता के नाम पर हमारी विकृत मानसिकता मानवीय मूल्यों की विध्वंसक बनकर हमारे विकास के मार्ग को अवरुद्ध कर रही हैं।ऐसे में डॉ. रमेश पोखरियालशनिशंकश के साहित्य का पठन–पाठन व अनुसरण करने की नितांत आवश्यकता हैं क्योंकि निशंक के कथा साहित्य में जीवन मूल्यों का चित्रण यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया गया हैं। जीवन मूल्यों को साथ में लेकर चलने वाले इस साहित्य साधक द्वारा अपने उपन्यासों में पर्वतीय समाज का सूक्ष्म एवं यथार्थ चित्रण करने के साथ–साथ नैतिक व मानवीय मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति वास्तव में पूर्ण समाज को दिशा निर्देशित करती हैं।

–संदर्भ सूची –

१) डॉ.राम गोपाल सिंह चौहान, 'स्वातंत्रयोत्तर हिंदी उपन्यास', प्रकाशन वर्ष १९६५, पृष्ठ.३४

२)डॉ. धर्मवीर भारती, 'मानव मूल्य और साहित्य', प्रथम संस्करण, प्रकाशन वर्ष २०१९, पृष्ठ.१३५

३)डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', 'बीरा', वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण–२००८ पृष्ठ.१४

४) डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', 'बीरा', वाणी प्रकाशन,प्रथम संस्करण, प्रकाशन वर्ष–२००८, पृष्ठ.२०

५)डॉ. रमेश पोखरियाल शनिशंकश, श्बीराश्श्वाणी प्रकाशन,प्रथम संस्करण, प्रकाशन वर्ष–२००८, पृष्ठ १६०

६) डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', 'मेजर निराला', प्रकाशन वर्ष–२००८, संस्करण प्रथम पृष्ठ.१७

७)डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', 'पहाड़ से ऊंचा', वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण–२००८, पृष्ठ.०५

८) डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', 'निशांत', प्रकाशन वर्ष–२००८, पृष्ठ.२०

९)) डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', 'अपना पराया', प्रभात प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष–२०१०, पृष्ठ.०९